नईदुनिया लाइव

इंदौर, मंगलवार 18 दिसंबर 2018 www.naidunia.com

17 सर्दियों को न बनने दें वजन बढ़ने का मौसम

18 फैंस ने मनाया जॉन का जन्मदिन

भारत से है पूर्व जन्म का नाता इसलिए यहां आने के लिए सीखी हिंदी

इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल में शामिल होने आ रहीं जापानी मूल की लेखिका तोमोको किकुची से चर्चा

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

भारत से मेरा संबंध पूर्व जन्म का है। वरना मैं क्यों भारत की ओर आकर्षित होती। जब मैं 11वीं-12वीं की छात्रा थी, तब टीवी के उन प्रोग्राम को बहुत चाव से देखती थी, जिनमें भारत की संस्कृति या जानकारियां शामिल होती थी। तभी से भारत को जानने का मन था। पर मुझे पता चला कि यहां की प्रमुख भाषा हिंदी है तो मैंने टोक्यो के इंस्टीट्यूट से हिंदी सीखना शुरू किया। वहां स्पर्धा में मैंने पहला स्थान प्राप्त किया और वहां मिली छात्रवृत्ति सआगरा आकर एक साल के लिए हिंदी पढ़ने का मौका मिला। इस तरह 1992 में करीब 22 साल की उम्र में भारत आने के बाद मैं यहीं की होकर रह गई। अपने जीवन के इस अहम निर्णय और उसकी वजह से रूबरू कराया जापान मूल की लेखिका तोमोको किकुची ने।

26 साल से भारत में रहकर हिंदी और जापानी भाषा में साहित्य की सेवा कर रही यह ख्यात लेखिका इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल-आह्वान' के लिए शहर आ रही हैं। हैलो हिंदुस्तान द्वारा नईदुनिया के सहयोग से 21 से 23 दिसंबर तक आयोजित होने वाले इस आयोजन में आने से पहले तोमोको ने साहित्य और सफर के बारे में चर्चा की। वे बताती हैं कि आगरा में एक साल पढ़कर जब मन नहीं भरा तो वे महारानी गायत्रीदेवी कॉलेज से हिंदी, समाजशास्त्र और भारतीय शास्त्रीय संगीत में बीए करने के लिए जयपुर आ गई। फिर एमए करने के लिए जेएनयू गई और पीएचडी भी हिंदी में ही की। 2006 के बाद मुझे लगा कि हिंदी और जापानी भाषा के बीच सेतु का काम किया जाए। इस तरह अनुवाद और लेखन का सिलसिला शुरू हुआ है।

पास यहां से प्राप्त करें

इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल में शामिल होने के इच्छुक साहित्यप्रेमी कार्यक्रम के पास 'नईदुनिया' और 'हैलो हिंदुस्तान' के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

घटना का दोहराव न हो

जापान एक ऐसा देश है जो परमाणु बम की त्रासदी आज भी झेल रहा है। इसलिए मैंने हिरोशिमा का दर्द पहले बयां किया ताकि घटना का दोहराव न हो। 1982 में जापानी भाषा में लिखी किताब 'हिरोशिमा नो टिका' जो आज भी बच्चों को इस विषय में शिक्षित कर रही है सबसे पहले उसे 'हिरोशिमा का दर्द' नाम से हिंदी में अनुवादित किया।

साहित्य को एक पक्ष में रखना मुश्किल

साहित्य समाज का आईना भी है और समाज का पथ प्रदर्शक भी। इसलिए इसे किसी एक पक्ष में नहीं रखा जा सकता। साहित्य में कई संस्कृतियों का समावेश होता है इस नाते इसे किसी एक परिभाषा में भी नहीं बांधा जा सकता। जहां तक बात साहित्य के सुखांत या दुखांत की है तो साहित्य का उद्देश्य पाठक को आशा की किरण दिखाना है। फिर चाहे वह साहित्य भारत का हो या जापान का। समाज और संस्कृति का आपस में संबंध जरूर है लेकिन दोनों देशों की समस्याएं अलग-अलग है। फिर भी दोनों ही देशों में सुखांत पसंद किया जाता है।

कुछ के लिए दुखांत भी आशा की किरण

सुखांत वाले साहित्य की पसंद के बावजूद दुखांत वाले साहित्य का भी कम वर्चस्व नहीं है। देश, समाज में कई परेशानियां होती है। ऐसे में जब एक निराश, हताश व्यक्ति अपने से भी ज्यादा परेशानी और हताश विवरण वाले साहित्य को पढ़ता है तो वह उसमें आशा कि किरण देख लेता है। इसलिए भी दुखांत वाले साहित्य को पसंद किया जाता है।

तो पसंद किया जाएगा साहित्य

ऐसा नहीं कि आज की पीढ़ी साहित्य को पसंद नहीं करती। यदि पाठक साहित्य से दूर हो रहा है तो वह साहित्य की ही खामी है। वक्त के साथ संस्कृति बदलती रहती है। यदि बदलती संस्कृति के अनुरूप साहित्य का सृजन होगा तो उसे पसंद भी किया जाएगा।

गुरुकुल इंटर स्कूल डिबेट कॉम्पीटिशन आज से शुरू

नईदुनिया गुरुकुल शिक्षा से संपूर्णता

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर।

कहानियों के जरिए सरल भाषा में बच्चों को संस्कार देने की नईदुनिया की पहल गुरुकुल की सभी कहानियों का प्रकाशन किया जा चुका है। कहानियां प्रकाशित करने के साथ ही स्कूलों की असेंबली में बच्चों को ये कहानियां सुनाई भी गईं। अब इसके अगले चरण में मंगलवार से दो दिनी इंटर स्कूल डिबेट कॉम्पीटिशन का आयोजन किया जा रहा है। प्रीतमलाल दुआ सभागार में होने जा रहे इस आयोजन के पहले दिन नॉकआउट राउंड होगा। इसमें 25 स्कूलों के स्टूडेंट्स शामिल होंगे। इसके लिए उन्हें विषय तात्कालिक दिया जाएगा। विषय पर पक्ष और विपक्ष में स्टूडेंट्स अपनी बात रखेंगे। शहर के वरिष्ठ साहित्यकार हरेराम वाजपेयी, ज्योति जैन और अरविंद जैन जज की भूमिका निभाएंगे। मंगलवार को चुने गए स्टूडेंट्स बुधवार को सेमीफाइनल और फाइनल मुकाबले में हिस्सा लेंगे। कॉम्पीटिशन सुबह 9 बजे से शुरू होगी। अधिक जानकारी के लिए 9993099017 पर संपर्क किया जा सकता है।

बर्मा, जापान की डिश में सेलिब्रिटी शेफ ने लगाया 'इंदौरी तड़का'

शेफ राखी वासवानी ने तैयार की लजीज डिशेज

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

देश-विदेश के जायके को इंदौरी स्वाद देने की कोशिश करना नई बात नहीं है, लेकिन बात तो तब बनती है जब इस इनोवेशन में 'ऑथेंटिसिटी' को ध्यान में रखा जाए। यह कोशिश सेलिब्रिटी शेफ राखी वासवानी ने इंदौर में की और फूड ब्लॉगर्स ने उस क्रिएशन की स्टारिंग की। विजयनगर क्षेत्र स्थित एक बार में शेफ राखी वासवानी फूड कंसल्टेंट के रूप में आईं। इनके साथ मुंबई की ही सेलिब्रिटी शेफ मितेश रंगरास भी आए थे।

इंदौर में पकवानों को और भी लजीज बनाने की इनकी जायकेदार कोशिश में यूं तो कई तरह के स्टार्टर, मेनकोर्स, डेजर्ट, मॉकटेल और कॉकटेल शामिल थे, लेकिन कुछ प्रयोग सबसे ज्यादा आकर्षण का केंद्र रहे। इनमें बरितो बाउल, नाचोस ओवरलोड, मैक एंड चीज फ्रिटर्स, मशरूम एंड वॉरचेस्टंट, डबल ट्रपल चीज केक, बुराटा चीज विद पिज्जा, नाचोस, सुशी, चिकन टिक्का एंड ग्रील्ड ऑनियन पिज्जा, चॉकलेट चीज केक, चिली पनीर विथ क्रकलिंग स्पिनेच आदि शामिल थे। 11 साल की उम्र से खाने के साथ प्रयोग करने वाली राखी वासवानी लीविंग फूड चैनल पर कुकिंग से सभी को रूबरू कराती हैं। उन्होंने इंदौर में स्वाद के साथ प्लेटिंग की भी बातें साझा की। यहां उन्होंने अपनी सिग्नेचर डिशेज बताई तो कुछ डिशेज को इंदौरी तड़का भी दिया। इस मीट में आस्था महाजन, बैली कानूनगो, सिद्धांत चोपड़ा, शिवम आनंद, ज्योत्सना बांबिनी, खदिजा, सौम्या मोहन्ते, शेफ अमित पमनानी, अपेक्षा उपस्थित थे।

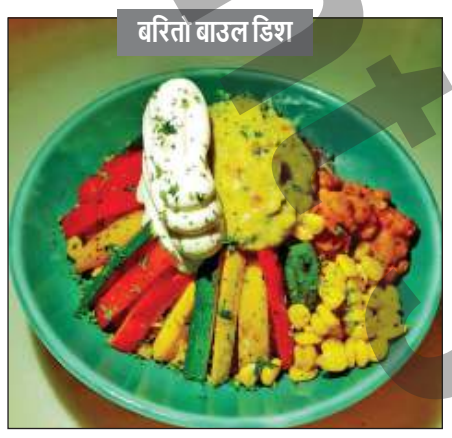

फूड ब्लॉगर्स मीट में राखी वासवानी के साथ शेफ मितेश, आस्था महाजन, बैली कानूनगो, सौम्या मोहन्ते, खादिजा, प्रियंका, शिवम आनंद आदि।

जहां हैं वहां के अनुरूप करें कुकिंग स्किल डेवलप

फूड ब्लॉगर आस्था महाजन बताती हैं इस मीट में उन्होंने फूड के फ्यूजन को जाना। एवोकाडो को पपड़ी के साथ, ग्वाकामोले एवाकाडो को नाचोस के साथ सर्व करने का अंदाज यहां देखा। मेक एंड चीज फ्रिटर्स को दिया गया इंदौरी स्वाद बेहद लजीज था। यहां उन्होंने जो बात बताई उसमें हम यह जान सके कि आप जो भी डिश बना रहे हैं यदि उसमें स्थानीय जायका शामिल करेंगे तो शहर का हर व्यक्ति उससे खुद को जोड़ सकेगा। अपनी कुकिंग स्किल को आप जहां रह रहे हैं वहां के स्वाद के अनुसार विकसित करें।

ऑथेंटिसिटी जरूरी

ब्लॉगर ज्योत्सना बांबिनी कहती हैं सेलिब्रिटी शेफ ने जो मेन्यू तैयार किया वह संतुलित था। अमूमन एक डिश किसी एक को पसंद आती है तो दूसरे को नहीं। ऐसे में उन्होंने बताया कि डिशेज ऐसी रखी जाएं जो सभी की पसंद के अनुरूप हों। इसके लिए स्थानीय स्वाद को शामिल करने के साथ उसकी ऑथेंटिसिटी बनाए रखना जरूरी है।

चॉकलेट चीज केक

फूड ब्लॉगर बैली कानूनगो बताती हैं अमूमन पिज्जा गोल ही मिलता है पर इस इनोवेशन में पिज्जा ओवल शेप का था और पीस छोटे थे। जिसका उद्देश्य यह था कि डांस के दौरान भी इसे खाया जा सके और भारी भी न हो। सबसे लजीज चॉकलेट चीज केक था जो कि फ्रेश ही सर्व किया जाता है।

बर्मा की डिश में भी प्रयोग

शेफ अमित पमनानी की डिशेज अलहदा थी जिसे यूनिक क्रॉकरी में सर्व किया गया। इन्होंने चिली पनीर पर क्रिस्पी स्पिनेच डाला था जो स्वाद के साथ क्रंची आनंद दे रहा था। इसी तरह बर्मा की डिश खाऊसोए में तोफो का इस्तेमाल किया जबकि यह वेजीटेबल या नॉनवेज से बनती है।

शहर के स्कूलों और कॉलेजों में जारी वार्षिकोत्सव में स्टूडेंट्स विभिन्न स्पर्धाओं और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में अपने हुनर का प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी श्रृंखला के अंतर्गत एक विद्यालय में सांस्कृतिक प्रस्तुति के पूर्व छात्राएं लैपटॉप पर चैटिंग में व्यस्त।

फोटो से कैलिफोर्निया के आयोजन में बनाया स्थान

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

युवा फोटोग्राफर आशुतोष दुबे का फोटो अंतराष्ट्रीय स्तर की स्पर्धा के लिए चयनित किया गया है। नेचर फोटोग्राफी करने वाले आशुतोष ने कैलिफोर्निया की व्यूबग कंपनी द्वारा आयोजित फोटोग्राफी कॉम्पीटिशन के लिए अपना जो फोटो भेजा था उसे फोटोग्राफी ऑफ द इयर अवॉर्ड की नेचर फोटोग्राफी कैटेगरी के लिए चयनित कर लिया गया है। आशुतोष बताते हैं कि उनके द्वारा लिए गए जिस फोटो का चयन हुआ है वह खरगोन के मम्मतपुर गांव का है। 21 वर्षीय आषुतोष नेचर फोटोग्राफी करते हैं।

न्यूयॉर्क फैशन वीक में दिखेगा महेश्वरी हैंडलूम का जलवा

महेश्वर की दो बेटियों की डिजाइन चयनित

महेश्वर/इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

अगले वर्ष फरवरी में महेश्वर की दो बेटियों द्वारा तैयार महेश्वरी हैंडलूम डिजाइन फैशन की दुकान में नया रंग जमाएगी। फैशन के सबसे बड़े इवेंट में से एक न्यूयॉर्क फैशन वीक में इन्हें प्रस्तुत किया जाएगा।

मुंबई में सात दिसंबर को आयोजित प्रतिस्पर्धा में उनकी डिजाइन को चयनित किया है। यह फैशन वीक 7 से 13 फरवरी तक होगा। महेश्वर की 22 वर्षीय आशी और 19 वर्षीय अवनी गुजराती द्वारा तैयार डिजाइन इवेंट में शामिल की गई। विश्वभर में आयोजित फैशन वीक के अंतर्गत न्यूयॉर्क में यह तीसरा सबसे बड़ा आयोजन होगा। आशी ने आईएनआईएफडी कॉलेज इंदौर से फैशन डिजाइनिंग में डिग्री हासिल की है, वहीं अवनी फिलहाल स्नातक द्वितीय वर्ष में अध्ययनत है।

फैशन वीक में शामिल करने के लिए डिजाइन तैयार करती आशी और अवनी।

भारतीय संस्कृति की लोकप्रियता बढ़ी

आशी ने बताया कि मुंबई की प्रतिस्पर्धा में उन्हें डिजाइन बनाने को कहा गया। उन्होंने ध्यान रखा कि न्यूयॉर्क में इन दिनों फैशन का ट्रेंड क्या चल रहा है। इसे लेकर उन्होंने अवनी के साथ डिजाइन तैयार की। यह डिजाइन इंडो-वेस्टर्न आधारित होगी। प्रतिस्पर्धा के दौरान आयोजकों ने तत्काल डिजाइन तैयार करने को कहा। खाकी रंग से लबरेज उन्होंने यह स्केच मात्र डेढ़ घंटे में तैयार किया। अब यह डिजाइन हैंडलूम पर उकेरी जाएगी। इस कपड़े से न्यूयॉर्क की पसंद का लांग शर्ट तैयार होगा। भारतीय मूल्य अनुसार उसकी कीमत लगभग तीन हजार रुपए है।

सीबीएसई का फिटनेस एसेसमेंट प्रोग्राम 19 से

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

सीबीएसई की ओर से अच्छे खिलाड़ियों की पहचान की जाएगी। इसके लिए खेलों इंडिया नेशनल फिटनेस एसेसमेंट प्रोग्राम 19 दिसंबर शुरू किया जाएगा। इसमें पहली प्राथमिकता के रूप में बच्चों की फिटनेस को शामिल किया जाएगा। इस प्रोग्राम में सिलेक्शन के दौरान यह देखा जाएगा कि 5 साल का बच्चा एक पैर पर 60 सेकंड तक खड़ा हो सकता है या फिर उसका बीएमआई कितना है। इसी तरह 9 साल का बच्चा 50 मीटर रेस कितनी देर में पूरी करता है या फिर कितने पुशअप्स लगा सकता है। हाल ही में इस प्रोग्राम से संबंधित एक नोटिफिकेशन जारी किया गया है।

28 तक चलेगी ट्रेनिंग

खेलो इंडिया नेशनल फिटनेस एसेसमेंट प्रोग्राम के लिए सीबीएसई ने दिसंबर महीने को ट्रेनिंग शेड्यूल में बांट दिया है। इसकी शुरूआत 19 दिसंबर से होगी, जो 28 दिसंबर तक चलेगी। सभी ट्रेनिंग सेशन जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम नई दिल्ली में होने हैं।

किसी भी चीज को बहुत जल्दी पाना चाहती है आज की पीढ़ी

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

■ आईएमए के सेमिनार में सुप्रिया धोंगड़े ने रखे विचार

किसी भी संगठन और समाज में आज सबसे बड़ी समस्या मिलेनियल जनरेशन और पुरानी जनरेशन के बीच सामंजस्य की आ रही है। नई पीढ़ी की अपनी अलग सोच और जीने का तरीका है और पुरानी पीढ़ी का चीजों को देखने का अपना तरीका है। दोनों के बीच सामंजस्य न होने से संगठन में कई समस्याएं पैदा हो जाती है। इनसे बचने के लिए दोनों को एक दूसरे को समझना जरूरी है।

यह बात सोमवार को आईएमए के कार्यक्रम में डॉ. सुप्रिया धोंगड़े ने 'आई एम ए मिलेनियल : मैनेजिंग (मेसिंग) माय लाइफ' विषय पर बोलते हुए कही। वो कहती हैं आज की पीढ़ी के लोगों में पहले के लोगों की तरह पेशंस नहीं है। पहले के लोग एक नौकरी में पूरी जिंदगी निकाल देते थे, लेकिन आज के युवा मन मुताबिक परिस्थितियां न होने पर नौकरी छोड़ने में तनिक भी नहीं झिझकते।

इसलिए संगठन में इस तरह की चीजों से बचने के लिए पुरानी पीढ़ी को भी नए लोगों के टैलेंट को समझकर उसके हिसाब से अपनी सोच में परिवर्तन करना जरूरी है। वहीं युवा पीढ़ी को भी यह जानना जरूरी है कि अनुभव का बहुत महत्व होता है और वो महज कुछ दिनों के काम में नहीं आ जाता।

टेक्नोलॉजी की वजह से बिगड़ रही लाइफ स्टाइल

आज की पीढ़ी विजुअल जनरेशन है। यूट्यूब, नेटफ्लिक्स, मोबाइल इनके जीवन के अहम भाग हैं। इसी वजह से इनकी लाइफ स्टाइल प्रभावित हो रही है। उनमें टेक्नोलॉजिकल स्किल्स हैं, लेकिन सोशल स्किल्स प्रभावित हो रही हैं। इसी वजह से बाहर सामंजस्य बिठाने में भी समस्या आती है। जीवन में पहले के लोगों की तरह अनुशासन नहीं है और उसी का असर सभी क्षेत्रों में दिखाई देता है।

टेक्नोलॉजी आईआईटी इंदौर द्वारा हो रही आईईईई की इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में टेक्नोलॉजी के एक्सपर्ट हुए शामिल

2020 तक 5जी इंटरनेट स्पीड होगी आपके मोबाइल में

इंदौर। नईदुनिया रिपोर्टर

दुनिया को गति देने के लिए जिस टेक्नोलॉजी पर सालों से रिसर्च चल रही है उसका पहला फेज 2020 अक्टूबर तक पूरा हो जाएगा। इसके बाद इंटरनेट पर डाटा ट्रांसफर की स्पीड कई गुना बढ़ जाएगी। इस टेक्नोलॉजी का नाम है 5जी। इसके पहले फेज की सभी टेस्टिंग हो चुकी है। यह कहना है वायरलेस और मोबाइल कम्युनिकेशन के रिसर्चर डॉ. नवीन कुमार का। उन्होंने बताया शुरुआत में एक जीबी की स्पीड मिलेगी। इसके बाद के फेज में अनलिमिटेड इंटरनेट स्पीड का उपयोग किया जा सकेगा। आईआईटी इंदौर द्वारा इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स (आईईईई) की इंटरनेशनल कांफ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। दो दिवसीय टेक्निकल सेशन में सोमवार को एक्सपर्ट ने नेटवर्किंग, सिक्युरिटी, कम्युनिकेशन पर हो रही रिसर्च के बारे में बात की।

5जी से स्मार्ट सिटी का सपना होगा पूरा

कांफ्रेंस में यूसीएस ग्रुप के वैदीराजा भट्ट ने टेक्नोलॉजी को स्मार्ट सिटी से जोड़कर बताया। उनका कहना है कि देश में बन रही स्मार्ट सिटी में ट्रैफिक, पानी की निकासी, कचरा प्रबंधन और जगह-जगह फैले बिजली के तार बड़ी समस्या है। आने वाली 5जी तकनीकी से स्मार्ट सिटी के सपने को साकार करना आसान होगा। इससे डाटा फास्ट होने से गवर्नमेंट रियल टाइम डाटा ले सकेगी। यूजर भी तकनीक का उपयोग करके ट्रैफिक और अन्य तरह की समस्या से निजात पा सकेंगे।

एडवांस टेक्नोलॉजी से सीधे गवर्नमेंट से जुड़ जाएगा हर व्यक्ति

बेसिक इंटरनेट फाउंडेशन के सुधीर दीक्षित का कहना है कि इंटरनेट कनेक्टिविटी से हर व्यक्ति जुड़ने के बाद गवर्नमेंट की सभी स्कीम सीधे व्यक्तियों के एक्सेस में रहेगी। अभी तक कई तरह की स्कीम में मिडिएटर होते हैं। कई तरह के अधिकारी डाटा को क्रॉस चेक करते हैं और आवेदन अप्रूव होने के लिए अपने सीनियर को भेजते हैं, लेकिन टेक्नोलॉजी का एडवांस मॉडल आने के बाद आधार नंबर के द्वारा व्यक्ति सीधे गवर्नमेंट विभागों के संपर्क में आ जाएगा। पानी, ड्रेनेज, सफाई, लोन और कई तरह के कामों में भी इंटरनेट यूजर सीधे उच्च स्तर पर अपनी शिकायतें दर्ज करा सकेंगे। सिसको आरएंडडी सेंटर के सुबोध गजारे का कहना है कि हमें एग्रीकल्चर को आगे बढ़ाने पर जोर देना होगा। प्रकृति ने कई तरह के सोर्स दिए हैं। जैसे सोलर एनर्जी। इस क्षेत्र में युवाओं को काम करने की जरूरत है। रियल आइडिया इसी तरह के हो सकते हैं जिसमें हम हमारी ही एनर्जी को बढ़ाने का काम कर सके। उदाहरण के तौर पर एक सप्ताह की सूर्य की एनर्जी का उपयोग हम डेढ़ साल तक कर सकते हैं। रूरल में जाकर बिजनेस आइडिया तलाशने की जरूरत है।

अब मशीन टू मशीन कम्यूनिकेशन का दौर है

एसजीएसआईटीएस के इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग के सीनियर प्रोफेसर डॉ. प्रकाश व्यवहारे ने बताया कि पहले मैन टू मैन कम्युनिकेशन का था। फिर मैन टू मशीन का दौर आया और अब मशीन टू मशीन का जमाना है। यानी अब सभी क्षेत्रों में इस तरह का ऑटोमेशन हो गया है कि मशीन को एक बार कमांड देने के बाद व्यक्ति भले उस काम को भूल जाए, लेकिन मशीनें आपस में कम्युनिकेशन करके सालों तक काम को अंजाम देती रहेगी। उदाहरण के लिए ड्राइवरलेस व्हीकल आने वाले हैं।

4 उपहारों के साथ
वशीकरण अंगूठी
पहनकर सभी को अपने अनुकूल बनाकर मनमाफिक काम कराएं।
900/-
01147385151